

4. 4. 3. 14. 8. 11. इति प्रायश्चित्ताहुती सर्वेषु दोषेषु ÇĀKṢH. Çr. 3. 19. 4. 7. 8. 21. 2. Kap. 1. 90. 91. 3. 70. श्रूयतां येन दोषेण मृत्युर्विप्रान् जिघांसति M. 3. 3. इन्द्रियाणाम् 6. 71. न मांसभक्षणे दोषः 3. 56. नाततायिबधे दोषो कृत्तुर्भवति 8. 351. नाध्यापनात् u. s. w. दोषो भवति विप्राणाम् 10. 103. ग्रामे समुत्पन्नान्दोषान् 7. 116. स्तेय 11. 161. दोषैश्चान्ये ऽपि ये वृताः 8. 77. पूर्वमात्तारितो दोषैः 354. तेन दोषेण लिप्यते 9. 243. तस्या दोषमदर्शयन् 8. 225. दोषान्विषयसङ्गान् 12. 18. कर्मज्ञं दोषमात्मनः 101. अनङ्गेन कते दोषे नैतां गर्हितुमर्हसि Hīp. 4. 6. मद्दोषसमदोषायाः प्रसादं कर्तुमर्हसि HARIV. 2993. R. 4. 17. 53. को ऽत्र दोषः Hīr. Pr. 30. नायमस्य दोषः 13. 14. N. 4. 19. 21. न दोषो ऽस्ति नैषधस्य — यत्र मे वचनं नाभि-नन्दति मोहितः 8. 17. नाहं परकृतं दोषं वदयाधाम्ये 26. 22. न तत्र दोषं प्रकीर्ष्यति er wird darin kein Unrecht sehen ÇĀK. 40. 5. दंपत्योर्व्युत्क्रमे दोषः समः VARĀH. BRH. S. 73. 12. KATHĀS. 4. 121. Gīt. 2. 10. इन्द्रियाणां प्रसङ्गेन दोषमृच्छति ladet eine Sünde auf sich M. 2. 93. दोषमवाप्नुयुः 12. 69. न दोषं प्राप्नुयात् 8. 355. प्रातदोष der sich eines Vergehens schuldig gemacht hat R. 1. 7. 13. वज्रशः संपतन्तीं त्वां जनः शङ्केत दोषतः könnte dich eines Vergehens in Verdacht haben. könnte etwas Uebles von dir denken N. 23. 26. न मामर्हसि — दोषेण परिशङ्कितुम् 24. 21. न खल्वहं चां नृपदोषतो ब्रवीमि so v. a. ich beschuldige nicht R. GORR. 2. 61. 34. Die folgenden Verbindungen haben gleichfalls die Bed. Jmd eines Vergehens beschuldigen, dieserhalb Vorwürfe machen: न मां दोषेण सुप्रिय गन्तुमर्हस्यकित्विषयम् R. 4. 21. 3. दोषगमन TATTVAS. 23. न दोषेणावगत-व्याकैक्यी भरत त्वया R. GORR. 2. 101. 32. दत्त्वा निशाया वचनोपेदोषम् MRĀKṢH. 38. 17. — 4) Nachtheit, Schaden: कर्मणां फलम् । दोषं वा यो ज्ञानाति DAÇ. 1. 6. यदि तत्रापि संपश्येदोषं संश्रयकारितम् M. 7. 176. अती-तानां च सर्वेषां गुणदोषौ 178. आयत्यां गुणदोषतः 179. चतुष्पादको दोषः JĀGṢ. 2. 298. अथज्ञया हि यदत्तं दातुंस्तदोषमावहेत् R. GORR. 1. 12. 30. 6. 33. 30. यावच्च न खरस्तात त्वयि दोषाय वर्तते । त्यक्त्वा वासमिमं तात सहस्रमाभिरितो व्रज ॥ 3. 1. 30. ममाभिगमनादोषं न प्राप्स्यसि वरानने 5. 3. 32. अन्यतरं वा दोषमनुप्राप्नुयाम् SADDH. P. 4. 13. a. कुलधमेतत्को दोषः welcher Nachtheit kann daraus entspringen? KATHĀS. 18. 141. शस्त्राग्नि-नुत्कृता दोषाः VARĀH. BRH. S. 34. 4. न दोषान्समुपैति 43. 37. ये च न दोषा-ज्जनयन्त्युत्पाताः 83. दोषा विप्रेगमृताः 83 (80. c). 6. विषदोषकरं SUÇR. 1. 219. 5. दोषकरं Schaden verursachend, verderblich für (gen.) VARĀH. BRH. S. 33. 20. 43. 21. 46. 9 (10). दोषकारिन् dass. 32. 27. दोषकत् dass. 32. 62. 83. 72. 88. 4. — 5) üble Folge: बलवदस्वस्थशरीरा शकुन्तला दृ-श्यते । तत्किमयमातपदोषः स्यात् ÇĀK. 33. 12. इत्थं मे शापदोषो ऽयं पृथ-दन्नागमावधिः KATHĀS. 2. 24. दोषेण, दोषात् oder दोषतस् in Folge von (et- was Schlechtem): आश्रयस्थानदोषेण MBu. 12. 1334. मातृदोषात् in Folge der schlechten Mutter, der Mutter von niedriger Herkunft M. 10. 14 (vgl. मातृदोषावगर्हित 6). अदाता वंशदोषेण कर्मदोषाद्विरहिता । उन्मादो मातृदा-पेण पितृदोषेण मूर्खता ॥ KĀS. 48. इयत्तं कालमभवं शापदोषेण कृस्तिनी KATHĀS. 13. 35. दुर्भिक्षदोषेण द्वापि ते पितरो गताः 3. 25. बलानि सा । पांत्वा तदोषतः प्राप पञ्चतां कृस्तिनी 13. 33. दोषेण in Folge von überh.: मधुरं कोकिलालापमृदोषेण कूजताम् R. 3. 79. 25. — 6) Alteration. Affection: पदस्य RV. PRĀT. 11. 23. — 7) verdorbene Säfte, ein gestörter Zustand und Thätigkeit der drei Flüssigkeiten des Körpers (s. u. 8), welche Krank-heit erzeugen; krankhafte Affection; Krankheitsstoff: दोषबलप्रवृत्त व्या-

धि) SUÇR. 1. 89. 12. 18. 4. 2. 7. 21. भिषक्कृतां करणं रसा दोषास्तु कारण-म् 362. 4. हरेडुभयतश्चापि दोषानत्यर्थमुच्छिक्तान् । सद्यो ऽपकृतदोषस्य रुक्शोपावुपशाम्यतः 113. 7. 193. 2. तत्र तत्र व्रणं कुर्याद्यथा दोषो न ति-ष्ठति 1. 15. 19. न च (व्रणं) वरमाणः सार्त्तदोषं रोपयेत् 18. 5. 2. 48. 2. दोषो-दक (bei Wassersucht) 90. 18. — दोषत्रयकर 1. 183. 18. °व्र 227. 20. त्रिदोषकृत् eine Unordnung der drei Flüssigkeiten hervorbringend 183. 18. °व्र 172. 19. °शमन 219. 5. त्रिदोष adj. die drei Flüssigkeiten affici-rend 189. 12. 218. 19. कूटपूर्वस्त्रिदोषतः TRIK. 2. 8. 40. अत्रात्तेर स राजानू-दस्वस्थः — दोषं (Krankheit) चास्यावदन्वैद्या शुष्कमांसोपमोगतम् Ka-THĀS. 8. 23. — 8) die drei flüssigen Grundstoffe (χυμός, humor) des menschlichen Leibes: Luft (वायु mit dem Sitz in der श्रोणि und im गुद), Galle (पित्त in dem Raume zwischen पक्षाशय und आमाशय) und Schleim (श्लेष्मन् oder कफ im आमाशय), welche bei gestörtem Zustande Krank-heit erzeugen, ÇABDAR. im ÇKDR. दोषधातुमलमूलं शरारम् SUÇR. 1. 48. 3. 31. 9. °स्थान 77. 12. दोषाभवाद् 113. 9. दोषोच्छ्राय 2. 4. 14. दोषोपचय 1. 20. 2. समदोष adj. 2. 348. 7. दोषामिधातुसाम्यकृता मितारुहेण DAÇAR. 60. 8. — 9) Kalb ÇABDAR. im ÇKDR.; vgl. den gaṇa पचादि zu P. 3. 1. 134, wo दोषं mit dem f. दोषौ als nom. ag. aufgeführt wird. — Es wäre vielleicht richtiger gewesen Bed. 7 und 8 zu einem besondern Artikel zu verbinden; in diesem Falle hätte Bed. 8 vorangehen mus- sen. — Vgl. अन्न°, लग्दोष, दृष्ट°.

2. दोष 1) m. Abend, Dunkel: अथराह्णि, सायम्, दोषे, अर्धरात्रे, निशाये BHĀG. P. 6. 8. 19. प्रकाशचन्द्रेदपरम्यदोषः (von दोषा?) — प्रेदोषः R. 5. 11. 8. Personif. ist der Abend einer der 8 Vasu und Gemahl der Nacht (शर्वरा) BHĀG. P. 6. 6. 11. 14. — 2) f. दोषौ Abend, Dunkel NAIGH. 1. 7. Nacht TRIK. 1. 1. 104. H. 143. MED. sh. 13. दोषामुपासमीमहे RV. 5. 3. 6. 1. 34. 3. प्रति दोषामुपासम् 4. 12. 2. त्विना दोषाकरं दोषा Nacht ÇATR. 10. 187. दोषाम् am Abend: रथौ दोषामुपासो कृष्यः RV. 10. 39. 1. दोषौ (alter instr.) adv. gaṇa स्वरादि zu P. 1. 4. 1. 37. UÇĀVAL. zu UÇĀDIS. 4. 174. bei Abend, bei Dunkel H. an. 7. 48. bei Nacht AK. 3. 5. 6. H. 1333. H. an. य उं श्रिया दमेष्वा दोषोपासं प्रशस्यते RV. 2. 8. 3. 4. 2. 8. 8. 22. 14. दोषा वस्तीरूपसः 1. 179. 1. 5. 32. 11. 6. 3. 2. 10. 40. 2. AV. 6. 1. 1. NIR. 4. 17. प्रातर, दोषा KĀND. Up. 6. 13. 1. ÇIC. 4. 46. Die personif. Nacht ist neben प्रभा Tageshelle eine Gemahlin Pushpārṇa's und Mutter von प्रेदोष Abend, निशिय (sic) Mitternacht und व्युष्ट Tagesanbruch, BHĀG. P. 4. 13. 13. 14. — Vgl. दोषस्, प्रेदोष, प्रातदोषम्.

दोषक m. = 1. दोष 9. Kalb ÇABDAR. im ÇKDR.

दोषग्राहन् (1. दोष + ग्रा°) adj. der nur die Fehler Anderer auffasst, sieht HALĀ. im ÇKDR. अवस्य सूर्यवेदोषांगुणान्गृह्णाति साधवः । दोषग्रा-हो गुणत्यागां चालनीव हि दुर्जनः ॥ Cit. im ÇKDR. — Vgl. गुणग्राहिन-दोषघ्न (1. दोष 7. + घ्न) adj. der Krankheit der Säfte entgegenwirkend SUÇR. 1. 124. 2. 163. 14. 177. 20.

दोषज्ञ (1. दोष + ज्ञ) 1) adj. vertraut mit dem was Schaden bringt, klug, verständlich AK. 2. 7. 4. 3. 4. 36. H. 341. an. 3. 151. RAÇH. 1. 93. — 2) m. Arzt (vgl. 1. दोष 7.) AK. 3. 4. 36. H. 472. H. an.

दोषणिश्रिप् (दो°, loc. von दोषन्, + श्रिप्) adj. in den Arm sich schlingend, — sich hängend: मम त्वं दोषणिश्रिपं कृणामि हृदयश्रिपम् AV. 6. 9. 2.